एक सर्वे के अनुसार, प्रदूषण के कारण तीन साल में 40% बच्चों को सांस की बीमारी होने की आशंका

दिल्ली बच्चों के लिए अस्थमा की राजधानी बनी

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

दिल्ली बच्चों के लिए अस्थमा की राजधानी बनती जा रही है। खतरनाक स्तर तक पहुंच चुके प्रदूषण के कारण अगले तीन साल में राजधानी के 40% बच्चों के अस्थमा के शिकार होने की आशंका है।

'हील फाउंडेशन और ब्रीथ ब्लू' के सर्वेक्षण में देश के अन्य महानगरों की तुलना में दिल्ली के बच्चों पर प्रदूषण का सबसे ज्यादा प्रभाव बताया गया है। दस से 15 साल आयु वर्ग के बच्चों पर किए गए अध्ययन में निजी और सरकारी स्कूलों को शामिल किया गया है। अध्ययन में शामिल डॉ. प्रीतेश कौल ने बताया कि राजधानी के 21 प्रतिशत बच्चों के फेफड़े असमान्य स्थिति में है, जबकि 19 प्रतिशत में सांस लेने में दिक्कत देखी गई। वहीं, चार अन्य शहरों में दूसरे स्थान पर बेंगलुरु है, जहां 36% बच्चों में सांस की परेशानी देखी गई।

कोलकाता के 35% और मुंबई के 27% बच्चों में सांस संबंधी परेशानी देखी गई। इस संबंध में पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट के श्वसन रोग विभाग के प्रमुख डॉ. राजकुमार ने बताया कि महानगरों में ऐसे बच्चों में सांस की परेशानी अधिक है जो खुले रिक्शे या दोपहिया वाहन से स्कूल जाते हैं। अकेले दिल्ली में 92% स्कूली बच्चे खुले वाहन से स्कूल पहुंचते हैं। मुंबई में 79, बेंगलुरु में 86 और कोलकाता में 65% बच्चे खुले वाहनों से स्कूल पहुंचते हैं।

● 3 से 4 घंटे प्रदूषण घातक : पेज-3

राजधानी में बढ़ता जा रहा प्रदूषण का स्तर

वर्ष	प्रदूषण स्तर
2008	201
2010	249
2012	276.9
2014	316

(नोट: पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट, आंकड़े आरएसपीएम में)

कितना खतरनाक

आरएसपीएम का मानक स्तर 60 मिलीग्राम प्रति घन मीटर होना चाहिए जो 300 से ऊपर पहुंच गया है।

सैंपल साइज 02 हजार से अधिक सरकारी स्कूल के बच्चों को शामिल किया गया, जबकि अध्ययन देश के चारों महानगरों में किया गया

दिल्ली : 735 | मुंबई : 573 | बेंगलुरु : 503 | कोलकाता : 562

सर्वेक्षण का तरीका

पीक फ्लो मीटर विधि के जरिए बच्चों की सांस की जांच की गई। डॉ. प्रीतेश कौल ने बताया कि इस उपकरण को मुंह में पांच मिनट तक रखा जाता है। इससे फेफड़े की गतिविधि को देखा जा सकता है। सर्वेक्षण में हालांकि ऐसे ही बच्चों को शामिल किया गया, जिनमें पहले कभी सांस की अस्थमा की परेशानी नहीं थी।

Hindustan (Delhi Edition)
5th May 2015